श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु

(श्रीश्री रसिकमुरारी जी)

श्रीश्री कृष्णगोपालानन्द देव गोस्वामी प्रभुपाद
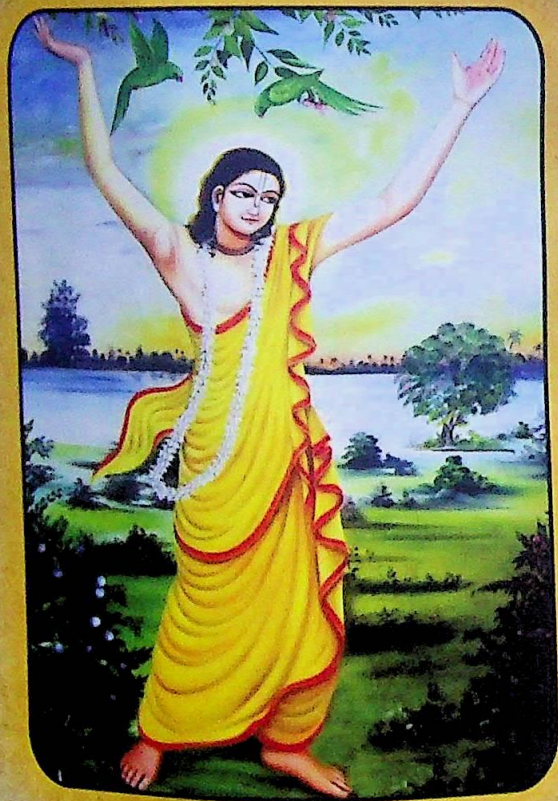
श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के श्रीगुरुदेव

श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी

॥ श्रीश्री गौरांग विधुर्जयति ॥

॥ श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर देव विजयते तमाम् ॥

॥ श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु शरणम् ॥

॥ श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु शरणम् ॥

॥ श्रीश्री बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद सहायम् ॥

"श्रीकृष्ण चैतन्य प्रभु नित्यानन्द।
हरे कृष्ण हरे राम श्री श्रीराधागोविन्द ॥"

"जय प्रभु श्यामानन्द श्रीरसिकानन्द।
त्रिभुवन में सेवा करें परम आनन्द ॥"

श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु

(श्रीश्री रसिकमुरारी जी)

प्रथम संस्करण - दश सहस्त्र ग्रन्थ

[श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी का 426 वाँ शुभ आविर्भाव तिथि, श्रीश्री गोवर्धन पूजा (अन्नकूट), 12 नवम्बर, ईस्वी सन् 2015]

ग्रन्थकार

श्रीश्री गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदायाचार्यवर्य

श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द देवगोस्वामी प्रभु वंशावतंस

श्रीश्री कृष्णगोपालानन्द देवगोस्वामी प्रभुपाद

श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर मन्दिर

''जगद्गुरु श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु द्वारपीठ''

[निखिल विश्व के चतु:सम्प्रदाय के वैष्णवों के बावन द्वारपीठों में एक प्रधान द्वारपीठ एवं माध्वगौड़ेश्वर सम्प्रदाय के केवल मात्र दो द्वारपीठों में अन्यतम प्रधान द्वारपीठ।]

सेवाकुञ्ज, श्रीधाम वृन्दावन-281121, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

मोबाइल नं - 9412226368, 9258056368, WhatsApp No. : 9412280938

E-mail : shyamanandaprabhu@radhashyamsundar.com; shyamanandaprabhu1535@gmail.com

website : www.radhashyamsundar.com

प्रकाशक : **प्रभु श्रीश्री श्यामानन्द प्रेम संस्थान ट्रस्ट**
श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर मन्दिर, सेवाकुञ्ज, लोई बाजार,
श्रीधाम वृन्दावन - 281121, जिला-मथुरा, (उ. प्र.) भारत
मोबाइल नं. : 9412226368; 9258056368

ग्रन्थ प्राप्ति स्थान :-

1. **श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर जी मन्दिर**
   ''जगद्गुरु श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु द्वारपीठ'', सेवाकुञ्ज,
   श्रीधाम वृन्दावन - 281121, जिला-मथुरा (उ.प्र.) भारत,
   मो. : 9412226368, 9258056368
2. **श्रीश्री राधागोविन्द जी मन्दिर**
   श्रीश्री श्यामानन्दी गद्दी, श्रीपाट गोपीवल्लभपुर-721506,
   पश्चिम मेदिनीपुर, पश्चिमबंग, भारत, मो.न.- 09932792543
3. **श्रीश्री महाप्रभु जी मन्दिर**
   श्रीश्री वासुदेव घोष ठाकुर जी का श्रीपाट, नरपोता तमलुक - 721636
   पूर्व मेदिनीपुर,पश्चिमबंग, भारत, मो. : 09734415031
4. **श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जन्मस्थान**
   धारेन्दा, पश्चिम मेदिनीपुर, पश्चिमबंग, भारत
5. **श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जन्मस्थान**
   रोहिनी, पश्चिम मेदिनीपुर, पश्चिमबंग, भारत
6. **श्रीश्री मदनमोहन जी मन्दिर**
   नाड़ाजोल, पश्चिम मेदिनीपुर, पश्चिमबंग, भारत
7. **श्रीश्री कुञ्जमठ**
   श्रीधाम पुरी में श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभुजी का आदि निवास स्थान
   गणामल्ल साई, वालिसाई, श्रीधाम पुरी, उड़िसा, भारत, मो. : 07504699049
8. **श्रीश्री बलदेव विद्याभुषण प्रभुपाद जन्मस्थली**
   अटान्तर, रेमुना, बालेश्वर, उड़िसा, भारत।
9. **श्रीश्री श्यामानन्द निकेतन**
   गौर विहार, पटिया, भुवनेश्वर-751030, उड़िसा, भारत
   फोन-0674-2600665
10. **प्रभु श्रीश्री श्यामानन्द आश्रम**
   राधानगरी, चन्दनेश्वर, बालेश्वर, उड़िसा, भारत।

उत्सर्ग पत्र

''सान्द्रानन्दकरं रसोन्नतिकरं श्रीकृष्ण भावाकरं।
चेतः शान्तिकरं तमःक्षयकरं भक्तावलीशंकरम् ॥
दुःखोच्छेदकरं सुखान्वयकरं कारुण्य सम्पत्करं।
दीनोद्धारकरं नमामि रसिकानन्द प्रभुं भास्करम् ॥''

श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी के प्रिय लीला परिकरगण जिन्हे स्वयं श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी के रूप में मानते हैं, श्रीश्रीकृष्ण के भक्तगण जिन्हे स्वयं श्रीवृन्दावन बिहारी श्रीश्री श्यामसुन्दर जी के रूप में जानते हैं, ज्ञानीगण श्रीश्री ब्रह्म के रूप में जिनकी उपासना करते हैं, योगीगण श्रीश्री परमात्मा के रूप में जिनका ध्यान करते हैं, ब्रह्मा-शिव एवं देवतागण जिनकी असीम गुणों का कीर्त्तन करते रहते हैं; जो स्वयं भगवान होते हुए भी भक्तभाव को अंगीकार करके, नरलीला के अनुरूप लीलाओं का संघटन करते हैं; जीवों की दुर्दशा से व्याकुल होकर श्रीश्रीकृष्ण 'प्रेम भक्ति' का दान करके जीवों के परम कल्याण के लिये जो प्रकट होते हैं; श्रीश्री श्यामानन्दी कुलचन्द्रमा, श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के कर कमलों में, ''गंगा जल से गंगा पूजा'' के जैसे, मेरे स्वरचित ''श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु'' ग्रन्थ पुष्प को भक्ति अर्घ्य के रूप में अर्पण कर रहा हूँ।

-श्रीश्री कृष्णगोपालानन्द देव गोस्वामी प्रभुपाद

भूमिका

सूर्य स्व-प्रकाश है। सूर्य के प्रकाश से ही सभी को पता चल जाता है कि वे सूर्य हैं, किसी को कहने की या दिखाने की आवश्यकता नहीं होती है। वैसे ही श्रीश्रीनवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की दिव्यातिदिव्य लीलाओं के प्रकाश से ही सभी को पता चल जाता है कि वे कौन थे और उनका तत्त्व क्या है!

श्रीश्री कृष्ण चैतन्य महाप्रभु जी के प्रिय लीला परिकर, श्रीश्री गोपाल गुरु गोस्वामी जी ने श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी को "श्रीश्री नवचैतन्य" नाम से सम्बोधित किया था। श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी के श्री गुरुदेव, श्रील हृदय चैतन्य अधिकारी ठाकुर जी ने भी श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी को "श्रीश्री गौर सुन्दर" कहा था। श्रीश्री राधाकृष्ण के सम्मिलित श्रीविग्रह, श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी ही नव रूप में श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी हैं। उनको ''श्रीश्री रसिकमुरारी जी'' के नाम से भी जाना जाता है। सर्वाश्रयी उनमें, स्वयं भगवान श्रीश्रीकृष्ण, वैकुण्ठाधिपति श्रीश्री नारायण, भगवान श्रीश्रीकृष्ण के चतुर्व्यूह में अनन्यतम श्रीश्री अनिरुद्ध जी एवं श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी के प्रिय लीला परिकर, श्री श्रीवास पण्डित जी भी विद्यमान हैं। किसी ने उनमें श्रीश्री ब्रह्म का दर्शन किया तो किसी ने श्रीश्री परमात्मा का दर्शन किया।

श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने, अपने श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी के स्वरूप के लीला के अनुरूप ही, श्रीश्रीकृष्ण प्रेम की बन्या से सम्पूर्ण भारत वर्ष को कैसे प्लावित कर दिया था, सुधी पाठकगण इस ग्रन्थ के अध्ययन से ही अवगत हो सकेंगे। उनकी कृपा से बहुत से महापातकी अपने सारे पाप कर्मों का परित्याग करके परम भक्त में रुपान्तरित हुए थे। मयूरभंज के महाराजा, श्री वैद्यनाथ भंज स-सहोदर श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की कृपा से राजवंश पर चले आ रहे ब्रह्मशाप से मुक्त होकर, परम वैष्णव तथा साधुसेवी हुए थे। धारेन्दा के प्रबल वैष्णव-विद्वेषी जमींदार, भीम एवं श्रीकर ने उनकी कृपा से सभी दुष्ट कर्मों का परित्याग करके वैष्णव धर्म को ग्रहण किया था तथा वैष्णव धर्म के प्रचार-प्रसार कार्य में पूर्णरूपेण उनका सहयोग किया था। बाणपुर निवासी, उड़ीसा का मुगल सूबेदार, अहम्मदी वेग ने श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की कृपा से प्रबल हिन्दू-विद्वेष तथा प्रजा उत्पीड़न जैसे सभी कुकर्मों का परित्याग करके, श्रीश्रीकृष्ण सेवा एवं साधु सेवा के लिये उनको बहुत भू-सम्पत्ति आदि भी प्रदान की थी तथा श्रीधाम पुरी में, श्रीश्री जगन्नाथ देव जी के नव कलेवर के लिये 10 माढ़ सोना भी दान में दिया था। उनकी कृपा से बहुत से कुतार्किक और श्रीश्रीकृष्ण भक्तिहीन ब्राह्मण पण्डित, पंचम पुरुषार्थ श्रीश्रीकृष्ण प्रेम ही जीवों का एकमात्र लक्ष्य जानकर, अन्य सभी मतों का परित्याग करके, उनके चरणाश्रित होकर, भगवान श्रीश्रीकृष्ण के भजन में तल्लीन हो गये थे।

शाह सूजा, दिल्ली के मुगल सम्राट शाहजहां के पुत्र, जो उस समय बंगाल के नवाब थे उन्होंने एवं पुरी के महाराजा, गजपति लांगुला नृसिंह देव तक ने श्रीश्री नारायण के रूप में श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की पूजा की थी।

केवल मनुष्य ही नहीं बल्कि जंगल के हिंस्र पशुओं तक ने उनकी कृपा से अपना हिंसक स्वभाव त्यागकर, साधु-वैष्णवों की सेवा में अपने आपको समर्पित कर दिया था। उड़ीसा के बानपुर में, एक मत्त जंगली हाथी जो नित्य बहुत से मनुष्य, अश्वों और हाथियों आदि का वध कर देता था तथा मकानों आदि को तोड़-फोड़ देता था वह श्रीश्री रसिकानन्द प्रभुजी का चरणाश्रय करके, श्रीश्री हरिनाम दीक्षा ग्रहण कर कण्ठ में तुलसी माला धारण करके, परम साधु सेवी हो गया था। श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने उस परम वैष्णव हाथी का नाम 'गोपाल दास' रखा था जिसके साथ पांच-सात सौ साधू हर समय रहते थे। वराह भूमि में दो विशालकाय हिंस्र व्याघ्रों ने उनका उपदेश सुनकर उनका चरणाश्रय किया था तथा स्वयं मार्ग दिखाकर श्रीश्रीरसिकानन्द प्रभु सहित सभी वैष्णवों को घोर जंगल से बाहर तक छोड़ आये थे।

श्रीश्री रसिकानन्द प्रभुजी के आदेश का पालन करने के लिये देवता भी तत्पर रहते थे। सूखाग्रस्त शेखर भूमि के राजा की प्रार्थना पर श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने श्री इन्द्रदेव को आदेश देकर, शेखर भूमि पर प्रबल वर्षा करवाई थी। एकबार, साधु-सेवा के दौरान, भीषण वज्रपात के साथ प्रबल वर्षण शुरू हो जाने पर उन्होंने श्री इन्द्रदेव को आदेश देकर साधु सेवा के स्थान पर वर्षा को रोक दिया था। मुक्तापुरवासियों ने श्रीश्री रसिकानन्द प्रभुजी और उनके साथी वैष्णवों को ठहरने के लिये अपने ग्राम में स्थान न देने पर 'श्री अग्निदेव' कुपित होकर ग्राम के सभी घरों को जलाने लग गये थे। सुवर्णरेखा नदी के दूर से प्रवाहित होते रहने के कारण साधु-वैष्णवों के स्नान आदि कर्मों में परेशानी होते देखकर श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने नदी को आदेश देकर गोपीबल्लभपुर के निकट से होकर प्रवाहित करवाया था। जिस किसी ने भी उनका अनिष्ट करने का विचार किया था वह सर्वनाश को प्राप्त हो गया था।

श्रीधाम पुरी में, दो बार रथयात्रा के दौरान, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभुजी के पहुँचने में विलम्ब होने के कारण, श्रीश्री जगन्नाथ देव जी उनकी प्रतीक्षा में अपने रथ को रोक कर खड़े रह गये थे। श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी जैसे 'श्रीश्री टोटा गोपीनाथ जी' के श्रीअंग में, (मतान्तर में श्रीश्री जगन्नाथ देव जी के श्रीअंग में)लीन हो गये थे ठीक वैसे ही वे श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के स्वरूप में, उड़ीसा के बालेश्वर जिला के अन्तर्गत रेमुना में, 'श्रीश्री खीरचोरा गोपीनाथ जी' के श्रीअंग में सशरीर अन्तर्धान हो गये थे।

संक्षिप्त रूप में श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभुजी (रसिकमुरारी जी) की दिव्य लीलायें

1. श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी का आविर्भाव, मल्लभूमि राज्य की राजधानी 'रोहिणी' नगर में, राजा 'श्रीअच्युतानन्द देव' के पुत्र के रूप में, ईस्वी सन् १५९० में कार्तिक मास की शुक्ला प्रतिपदा तिथि को हुआ था। उनकी माता का नाम था 'रानी भवानी देवी'। शिशुकाल से ही वे परम श्रीश्रीकृष्ण भक्त थे तथा श्रीश्री कृष्ण नाम श्रवण मात्र से ही उनके श्रीअंग में अष्ट सात्विक भावों का विकार प्रकाशित होता था। गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय में विशेष रूप से साधु-वैष्णव सेवा के वे ही प्रवर्तक थे।
2. श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने श्रीवासुदेव, श्रीमीमांसा मण्डण, श्रीबलभद्र सेन, श्री अनुकूल चक्रवर्ती, श्रीकविचन्द्र एवं श्रीयदुनन्दन चक्रवर्ती नामक अध्यापकों से विद्या अध्ययन किया था तथा श्रीजगन्नाथ मिश्र एवं श्रीहरि दुबे के निकट श्रीमद्भागवत अध्ययन करके विद्या विलास किया था।
3. एकदा, भगवान श्रीश्रीकृष्ण के विरह से व्याकुल होकर, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी घोर जंगल में प्रवेश करके, एक वृक्ष के नीचे अर्द्धमूर्छित अवस्था में 'हा कृष्ण! हा कृष्ण!' उच्चारण करते हुए भावावेश में रोने लगे थे। तब अरण्य के बाघ, सिंह, हाथी, हिरन आदि वन्य जन्तुओं ने भी परस्पर शत्रु भाव को त्याग कर, उन्हे चारों तरफ से घेरकर उनके साथ 'कृष्ण! कृष्ण!' उच्चारण किया था। इस प्रकार सात दिन बीत गये थे।
4. हिजली के अधिपति श्रीबलभद्र देव की कन्या, श्रीश्रीलक्ष्मीजी की अंशावतार, 'श्रीश्रीइच्छा देवी (श्याम दासी) जी' के साथ श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी का शुभ-विवाह सुसम्पन्न हुआ था।
5. श्रीवृन्दावन में, श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर जी की प्रेम सेवा में तल्लीन श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी को भगवान श्रीश्रीकृष्ण का तीन बार आदेश हुआ था कि वे शीघ्र उत्कल में पहुँच कर श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी को मन्त्रोपदेश करें। श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी ने ईस्वी सन् १६०८ में,

घण्टशिला में पहुंचकर श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी को सपरिवार दीक्षा प्रदान की थी।

6. ईस्वी सन् १६११ में श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी श्रीधाम वृन्दावन पधारे थे। श्रीवृन्दावन के द्वादश वन, उपवन आदि का भावावेश में दर्शन करने के पश्चात्, वे श्रीश्री गोवर्धन गये। मगर श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी साक्षात् श्रीश्रीकृष्ण के स्वरूप श्रीश्री गोवर्धन पर्वत पर पैर रखकर चढ़ेंगे तो नहीं!! यह जानकर 'श्रीश्री गोपालजी' स्वयं पर्वत से उतर कर, ब्रजवासी के वेष में उनको दर्शन दिये थे। श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी ने भी श्रीश्री गोवर्धन पर्वत पर कभी अपने चरण नहीं रखे थे।

7. श्रीवृन्दावन से प्रत्यावर्त्तन करके रोहिणी पहुँचने पर जब श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने देखा कि उनके पिता, राजा श्रीअच्युतानन्द देव जी का गोलोकवास हो चुका था तथा पिता के राज्य को लेकर भाइयों में प्रबल हिंसानल प्रज्ज्वलित थी, तो पिता के राज ऐश्वर्य को तृणवत् त्याग करके, एकमात्र अपने कुलदेवता को अपने साथ लेकर, वे सपत्नी काशीपुर में आकर रहने लगे थे। ईस्वी सन् १६१४ में, श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी ने वहाँ जाकर, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के कुलदेवता का नाम 'श्रीश्री गोपीबल्लभ राय' रखा था तथा ठाकुर जी के नामानुसार गाँव का नाम रखा था 'गोपीबल्लभपुर'। तब से श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की सेवा करने के लिये अष्टसिद्धियाँ एवं नव निधियाँ वहां पर सदा के लिये विराजमान हो गये थे। बाद में गोपीबल्लभपुर में श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने 'श्रीश्री राधागोविन्द जी' का सेवा भी प्रकाश किया।

८. श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी के आदेश से श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने जीवोद्धार व्रत का पालन करते हुये, ईस्वी सन् १६१५ में, धारेन्दा के दुष्ट जमींदार, भीम एवं श्रीकर को प्रथम मन्त्रोपदेश देकर जीवोद्धार का कार्य प्रारम्भ किया था। तत्पश्चात्, दीन-दु:खियों से लेकर राजा महाराजाओं और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रों से लेकर यवनों तक ने लाखों की संख्या में उनका चरणाश्रय किया।

9. एकदा, श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी ने स्वहस्तों से एक पत्र लिखकर

श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के पास भेजा जिसमें यह लिखा था कि पत्र को पढ़ते ही रसिकानन्द प्रभु जी उनसे आकर मिलें। जब श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने प्रसाद का एक ग्रास मात्र मुख में डाला हुआ था कि उनके पास श्री गुरु जी का पत्र पहुंचा। गुरु आज्ञा का पालन करते हुये, तत्क्षण वे प्रसाद छोड़कर, बिना हाथ मुँह धोये ही श्री गुरुजी से मिलने चले गये तथा चलते-चलते मार्ग पर सुवर्णरेखा नदी में आचमन किया। उनकी इस गुरुभक्ति को देखकर स्वयं श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी भी दंग रह गये थे।

10. श्रीश्रीकृष्ण सेवा में निमग्न श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी एकदा मध्याह्न के समय नैवेद्य अर्पित करने के लिये आकर क्या देखते हैं कि ठाकुर जी की रसोई नहीं बनी थी। अपनी पत्नी श्यामदासी जी से कारण पूछने पर उन्हें पता चलता है कि अपने पुत्र ब्रजानन्द को स्तन पान कराने के लिये जाने के कारण ही भोग रसोई में विलम्ब हो गया था। तब उन्होंने सोचा कि श्रीमती श्यामदासी जी अपने पुत्र के भूख से व्याकुल थीं और इसलिये उनको स्तन पान कराने लगीं लेकिन इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि श्रीश्री कृष्ण जी को समय पर भोग न लगाने के कारण श्रीश्री कृष्ण जी भूख से कितने व्याकुल हो रहे होंगे जो कि महा सेवा अपराध है। उन्होंने अत्यन्त क्रोधित और दुःखी होकर अपनी पत्नी को श्राप दे दिया, ''जब तक तुम त्रुटि मुक्त होकर श्रीश्रीकृष्ण की सेवा नहीं करोगी तब तक तुम्हारे पुत्र तुम्हारी गोद खाली करके चले जाते रहेंगे!'' अभिशाप के उपरान्त पुत्र ब्रजानन्द की मृत्यु हो गई। श्रीश्रीकृष्ण सेवा में श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने ऐसी निष्ठा का दृष्टान्त स्थापित किया था।

11. श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने ईस्वी सन् १६१७ में मयूरभंज के महाराजा, श्रीवैद्यनाथ भंज को मन्त्रोपदेश करने के उपरान्त, राज परिवार पर चले आ रहे ब्रह्मशाप का अपनी दैवी शक्ति से निवारण किया था जिसके फलस्वरूप राजा श्रीवैद्यनाथ भंज की अकाल मृत्यु नहीं हुयी। पूर्ववर्ती महाराजा, श्री वीरेश्वर भंज को एक सती ब्राह्मणी का दिया हुआ अभिशाप के कारण वहाँ पहले सोलह साल की आयु में ही राजपुरुषों की मृत्यु हो जाती थी। पर महाराजा श्रीवैद्यनाथ भंज जब पच्चीस वर्ष के हो चुके थे

तब श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने स-सहोदर महाराजा को दीक्षा प्रदान किया था।

12. श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी के आदेश से ईस्वी सन् १६२१ में, श्रीपाट गोपीबल्लभपुर में, एक विशाल रास महोत्सव का आयोजन किया था जिसमें भारत के श्रीवृन्दावन, श्रीअयोध्या, श्रीद्वारका, श्रीनीलाचल आदि सभी धामों व तीर्थ स्थानों से असंख्य साधु-सन्तों व वैष्णवों ने भाग लिया था। इस अवसर पर एक लाख वैष्णवों का चरणामृत संग्रह किया गया था जो अब भी श्रीधाम वृन्दावन के श्रीश्रीराधाश्यामसुन्दर मन्दिर में एवं श्रीपाट गोपीबल्लभपुर में उपलब्ध है।

13. श्रीपाट गोपीबल्लभपुर में, श्रीश्री रासलीला महोत्सव के दौरान, सेवा कर्म में व्यस्त श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के चरण में एक विषधर गोखुर नाग ने डस दिया था। मगर श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने किसी वैद्य को बुलाने के बजाय श्रीश्रीकृष्ण नाम के उच्चारण से ही तीव्र विष की क्रिया को सम्पूर्ण विनष्ट करके जगतवासियों को श्रीश्रीकृष्ण नाम की महिमा का अनुभव करवाया।

14. श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने ईस्वी सन् १६२३ में, शापग्रस्त वन के एक मत्त गजराज (हाथी) को दीक्षा देकर उसका नामकरण किया था ''गोपाल दास''। गले में तुलसी की कंठी धारण करने वाला वह हाथी परम साधु सेवी हो गया था तथा उसके साथ हर समय बहुत से साधु-संत रहने लगे थे। श्रीश्री शालग्राम जी को कच्चे चावल का भोग लगाने के अपराध के लिये बाणपुर के 'हरिहर' नामक व्यक्ति को श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी ने क्रोध पूर्वक सवंश हाथी योनि प्राप्त होने का शाप दिया था जिसका उद्धार श्रीश्री रसिकानन्द प्रभुजी के रूप में उन्होंने किया।

15. शाह सूजा, दिल्ली के मुगल सम्राट शाहजहां के पुत्र, जिस समय बंगाल के नवाब थे, उन्होंने लोकमुख से श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की अलौकिक महिमा को सुनकर, उनसे कुछ हाथियों को भेजने के लिये प्रार्थना की थी। श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने अपने शिष्य, ''गोपाल दास'' हाथी को आदेश देकर चौदह हाथियों को बुलवाया और उन्हे शाह सूजा के पास भेज दिया जिससे शाह सूजा ने उनकी श्रीश्री नारायण के रूप में पूजा की थी।

16. एकदा, भक्तों के साथ धर्म का प्रचार करते हुए, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी वराह भूमि के एक घोर जंगल में जाकर मार्ग भटक गये। अकस्मात् दो विशालकाय व्याघ्र वैष्णवों के सम्मुख आकर पथ रोक कर खड़े हो गये। श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने आगे जाकर उन व्याघ्रों को श्रीश्रीकृष्ण भजन करने का उपदेश दिया तथा उनके कर्णो में श्रीश्रीहरिनाम महामन्त्र प्रदान किया। उपदेश पाकर दोनों व्याघ्रों ने श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी का चरणाश्रय किया तथा उन लोगों को मार्ग दिखाकर उस घोर जंगल से बाहर ले आये।
17. श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के शेखर भूमि पहुँचने पर वहाँ के राजा ने आकर उनसे निवेदन किया कि वहाँ पर लगातार तीन वर्षो से वर्षा नहीं हो रही थी। तब, श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभुजी ने 'श्री इन्द्र देव' को आदेश देकर शेखर भूमि पर इतनी प्रबल वर्षा करवाई कि शेखर भूमि में हरियाली छा गई। शेखर भूमि के राजा-प्रजा सभी ने ईश्वर ज्ञान से श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की पूजा की।
18. एकदा, श्रीपाट गोपीबल्लभपुर में 'द्वादश महोत्सव' के दौरान, एक दिवस हजारों वैष्णवों की पंगत चल रही थी। तब, प्रबल वायु एवं घड़-घड़ बिजली की चमक के साथ प्रबल वर्षण प्रारम्भ हो गया और साधू पंगत के स्थान को छोड़कर भागने लगे। तब, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने देवराज इन्द्र देव को आदेश दिया और श्री इन्द्र देव ने आदेश का पालन करते हुए उस स्थान पर जहाँ वैष्णव सेवा हो रही थी बिन्दुमात्र भी जल नहीं बरसाया जब कि बाहर प्रबल वर्षा होती ही रही।
19. राजस्थान के जयपुर के निकटवर्ती स्थान गलता में 'श्री' सम्प्रदाय की गद्दी के महन्त, श्रीसूर्यानन्द १४००० नागा साधुओं के साथ तीर्थ भ्रमण करते हुए, श्रीपाट गोपीबल्लभपुर पधारे। वहाँ, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के अलौकिक व्यक्तित्व तथा उनकी सेवा परिपाटी व भजन निष्ठा, साधु-सेवा आदि दर्शन करके श्रीसूर्यानन्द जी ने स्वयं उनके पुत्र के रूप में पुनर्जन्म ग्रहण करने की इच्छा प्रकट की थी। तब, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की इच्छा से, श्री सूर्यानन्द जी ने 'श्रीश्री नयनानन्द प्रभुपाद जी' के रूप में, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के ज्येष्ठ पुत्र, श्रीश्री राधानन्द प्रभुपाद जी के पुत्र बनकर जन्म ग्रहण किया था।

20. ईस्वी सन् १६२६ में, वसन्तिया निवासी 'मच्छन्द्र शाह' नामक एक मुसलमान फकीर ने तन्त्र शक्ति के प्रयोग द्वारा अपनी सिद्धाई का प्रदर्शन करते हुए, एक शेर की पीठ पर सवार होकर श्रीगोपीबल्लभपुर पधारा। फकीर जी के मन की भावना को ताड़कर, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभुजी ने अपने एक शिष्य 'श्रीनागरी उद्धव' को फकीर के स्वागत के लिये आगे भेजा। श्रीनागरी उद्धव एक टूटी हुई पुरानी दीवार पर सवार होकर फकीर के पास पहुँचे और फकीर आश्चर्यचकित रह गए। फिर फकीर अपनी तुच्छ वशीकरण विद्या के प्रयोग से लज्जित होकर यह सोचने लगे कि जिसके शिष्य में ही इतनी शक्ति है तो वह क्या स्वयं श्रीश्री नारायण नहीं हैं!! तब उस फकीर ने श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की शरण ग्रहण कर ली।
21. ईस्वी सन् १६३० में, अपने निकुंज प्राप्ति से पहले, श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी ने श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के माथे पर तिलक की रचना की तथा पगड़ी बाँध कर उनको समग्र श्यामानन्दी गोष्ठी के तथा ३५०० मठों व मन्दिरों के एकमात्र सेवाइत महन्त के पद पर अभिषिक्त किया था। तब से, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के वंशज गोस्वामी प्रभुपादगण, वंश परम्परा से श्रीश्री श्यामानन्दी गोष्ठी के कर्णधार के रूप में सम्पूर्ण वैष्णव जगत् का दिग्दर्शन करते आ रहे हैं।
22. ईस्वी सन् १६३७ में, विशुद्ध वैष्णव धर्म का प्रचार करते हुए, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी अपने साथी भक्तों के साथ 'मुक्तापुर गाँव' में पहुँचे। परन्तु ग्रामवासियों ने उन लोगों के रहने के लिये गाँव में स्थान नहीं दिया। श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी को इस प्रकार अपमान करने के कारण श्री अग्निदेव अत्यन्त क्रोधित हो गये। तब, श्री अग्निदेव के कोप से उस गांव में भीषण आग लग गई तथा गांव के सारे घर जलने लगे। श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के चरणारविंदों में अपने द्वारा हुए अपराध को जानकर सभी ग्रामवासियों ने आकर श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की शरण ली जिससे श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के आदेश से कुपित श्री अग्नि देव शान्त हो गये तथा गांव में लगी आग बुझ गई।
23. एक बार, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी एवं उनके दो-तीन सौ वैष्णव साथी श्रीश्री जगन्नाथ देव जी के दर्शन करने के लिये, श्रीधाम पुरी

जाने के रास्ते में, जाजपुर के वैतरणी नदी को पार करने के लिये एक साथ नाव पर चढ़ गये। बाढ़ के कारण प्रबल रूप से स्फीत नदी में, तेज हवा के कारण बीच नदी में ही नाव पलट गई और सभी वैष्णव नदी में गिर गये। मगर, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभुजी की कृपा से बीच नदी में भी पानी नीचे उतर कर सिर्फ घुटने तक की गहराई का हो गया तथा सभी वैष्णव डूबने से बच गए और सुरक्षित रह गये। इस चमत्कार को देखकर सभी जाजपुरवासी आश्चर्य चकित हो गए और श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी को स्वयं ईश्वर जान कर उनके शरणागत हो गये।

24. ईस्वी सन् १६३७ में, श्रीधाम पुरी में रथयात्रा के दौरान, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी को वहाँ पहुँचने में विलम्ब हो गया था। श्रीधाम पुरी में, श्रीश्री जगन्नाथ देव जी श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की प्रतीक्षा में अपने रथ को रोककर खड़े रह गये थे तथा श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के वहाँ पहुंच कर, रथ को माथे से धक्का लगाने पर ही रथ चला था। इस चमत्कार से आश्चर्यचकित होकर, महाराजा, श्री गजपति लांगुला नृसिंह देव ने श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी का चरणाश्रय किया तथा श्रीश्री नारायण स्वरूप में उनकी पूजा की थी।

25. ईस्वी सन् १६५३ में, फाल्गुन शुक्ला प्रतिपदा तिथि को, श्रीश्रीकृष्ण के नाम तथा श्रीश्रीकृष्ण प्रेम का प्रचार करते हुये श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी उड़ीसा के बालेश्वर जिले के 'रेमुणा' में पहुँचे। पहले श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी जैसे 'श्रीश्री टोटा गोपीनाथ जी' के श्री अंग में लीन हो गये थे ठीक उसी प्रकार इस बार वे श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के रूप में 'श्रीश्री क्षीरचोरा गोपीनाथ जी' के श्रीअंग में सशरीर अन्तर्द्धान हो गये।

श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी का तत्त्व

श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की दिव्यातिदिव्य लीलाओं का वर्णन अनेक ग्रन्थों में उपलब्ध है जिससे उनके तत्त्व के बारे में सभी को पता चलता है। सर्वाश्रयी श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के परिकरगण, वैष्णव आचार्यगण एवं वैष्णव दार्शनिकगणों ने उन्हे अलग-अलग रूपों में दर्शन किया है। कोई उन्हे श्रीश्री गौरांग के रूप में, कोई श्रीश्रीकृष्ण के रूप में, कोई श्रीश्री नारायण के रूप में, कोई श्रीश्री अनिरुद्ध के रूप में, कोई श्रीश्री श्रीवास पण्डित के रूप

में, कोई श्रीश्री ब्रह्म के रूप में तो कोई श्रीश्री परमात्मा के रूप में उनका दर्शन किया था। श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के स्वरूप के बारे में विभिन्न ग्रन्थों में जो वर्णन प्राप्त है उसीके आधार पर उनके तत्त्व का निरूपण किया जा रहा है।

स्वयं श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी ही श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु हैं

'श्रीश्री श्यामानन्द रसार्णव' ग्रन्थ में, प्राचीन कवि, श्रील कृष्णचरण दास जी ने श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के तत्त्व के बारे में यूं लिखा है,

"केह कहे रसिकेन्द्र, प्रकाश आनन्द कन्द
अबनीते लीला तनुधारी।
कृष्णदास दृढ़ मने, अन्य कभू नाहि जाने
गौरचंद्र रसिकमुरारी।।"

-श्रीश्री श्यामानन्द रसार्णव (५)

[अर्थात्–"कोई-कोई कहते हैं कि श्रीश्री रसिकेन्द्र (श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी) अवनी पर लीलामय शरीर धारण करके, आनन्दमय स्वरूप में प्रकाशित हुये हैं। मगर, कृष्णदास दृढ़ मन से जानता है कि श्रीश्री रसिकमुरारी जी अन्य कोई नहीं अपितु स्वयं श्रीश्री गौरचन्द (श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु) ही हैं।"]

उसी श्रीश्री श्यामानन्द रसार्णव ग्रन्थ में, श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी के प्रिय लीला परिकर, श्रीश्री गोपाल गुरु जी के वचनों का उल्लेख किया गया है कि श्रीश्री गोपाल गुरु जी ने इस प्रकार कहा था,

"वृथा बंचनाते आर किना जान तुमि।
तुमि सेई नब श्री चैतन्य जानियाछि आमि।।"

-श्रीश्री श्यामानन्द रसार्णव (५)

[अर्थात्–''मुझे वृथा वंचना मत करो, क्या तुम नहीं जानते हो! मैं यह जानता हूँ कि तुम श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी ही नव रूप में श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी हो।'']

श्रीश्री रसिकमंगल ग्रन्थ में, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के लीला परिकर, श्रील गोपीजनवल्लभ दास ने कहा-

"असीम लावण्य गुण रसिकेन्द्र चन्द्र।
यार गुण गाय अज भव देववृन्द॥

किछुदिन पृथीवीते अवतीर्ण हइयां।
सर्वजीव उद्धारिल प्रेम भक्ति दिया॥"

-श्रीश्री रसिकमंगल (उत्तर 16/38-39)

[अर्थात्–"ब्रह्मा, शिव एवं देवतागण असीम लावण्य एवं गुणयुक्त श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के गुणों का कीर्तन करते हैं। पृथ्वी पर कुछ दिन अवतीर्ण होकर उन्होंने प्रेमभक्ति प्रदान करके सभी जीवों का उद्धार किया है।"]

उसी श्रीश्री श्यामानन्द प्रकाश ग्रन्थ में, श्रीश्री श्यामानन्द प्रभु जी के प्रति श्रील हृदय चैतन्य अधिकारी ठाकुर जी द्वारा कहे गये वचनों का इस प्रकार उल्लेख है,

"तोमा सम देखि एइ रसिक शेखर।
जानि जात हैल आसि श्री गौर सुन्दर।।"

-श्रीश्री श्यामानन्द प्रकाश (१५/४८)

[अर्थात्–"इस रसिकशेखर (श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी) को तुम्हारे समान ही देख रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि श्रीश्री गौर सुन्दर (श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु)ने ही श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के रूप में आकर जन्म लिया है।"]

श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी श्रीश्रीकृष्ण के चतुर्व्यूह में से श्रीश्री अनिरुद्ध जी भी हैं

श्रील कृष्णचरण दास जी विरचित 'श्रीश्री श्यामानन्द प्रकाश' ग्रन्थ में, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के तत्त्व के बारे में यों वर्णन है,

"श्री रसिक मुरारी त्रिभुवन धन्य।
अनिरुद्ध अवतार साक्षात् प्रमाण।।"

-श्रीश्री श्यामानन्द प्रकाश (१०/२)

[अर्थात्–"श्रीश्री रसिकमुरारी जी जो कि साक्षात श्रीश्री अनिरुद्ध जी के अवतार हैं, उनके पृथ्वी पर प्रकट होने से त्रिभुवन धन्य हो गया है उसका प्रमाण है।"]

उसी 'श्रीश्री श्यामानन्द प्रकाश में पुनर्बार वर्णन आता है,

"अनिरुद्धावतार चतुर्व्यूहाधिपति।
नारायण सम मूर्ति रसिके प्रसिद्धि।।"

-श्रीश्री श्यामानन्द प्रकाश (१५/१७)

[अर्थात्–"भगवान् श्रीश्रीकृष्ण के चतुर्व्यूह (वासुदेव, संकर्षण, प्रद्युम्न तथा अनिरुद्ध) में से अनन्यतम अधिपति, श्रीश्री अनिरुद्ध जी ही श्रीश्री रसिकमुरारी जी हैं जो कि श्रीश्री नारायण के समान हैं - यह तत्त्व सर्वजन विदित है।"]

श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी वैकुण्ठाधिपति नारायण भी हैं

श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के लीला परिकर, श्रीमद् गोपीजनबल्लभ दास जी विरचित 'श्रीश्री रसिकमंगल ग्रन्थ' में, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी को श्रीश्री नारायण के समान कहा गया है,

"धन्य धन्य ईच्छा देई, लक्ष्मी अंशे जन्म होई।
जांर पति नारायण सम।।"

-श्रीश्री रसिकमंगल-पूर्व (११/११)

[अर्थात्–"श्रीश्री लक्ष्मी जी के अंश से जात श्रीश्री ईच्छा देवी धन्यातिधन्य हो जिनके पति साक्षात् श्रीश्री नारायण के समान हैं।"]

उसी श्रीश्री रसिकमंगल ग्रन्थ में पुनर्बार यों भी कहा गया है,

"सबे बले ए पुरुष छिला कोन खाने।
नारायण सम देखि सकल लक्षणे।।"

-श्रीश्री रसिकमंगल-पूर्व (१२/१०३)

[अर्थात्–सभी कहने लगे, "ये पुरुष कहां पर थे! देख रहे हैं, इनके सारे लक्षण श्रीश्री नारायण के समान ही हैं!"]

उसी श्रीश्री रसिकमंगल ग्रन्थ में महाराजा श्री वैद्यनाथ भंज प्रसंग में पुनर्बार वर्णन है,

"बहुरूपे स्तुति कैल वैद्यनाथ राजा।
नारायण सम कैला श्री चरण पूजा।।"

-श्रीश्री रसिकमंगल-दक्षिण (१३/७१)

[अर्थात्– "श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की बहुत प्रकार से स्तुति करके, मयूरभंज के महाराजा, श्री वैद्यनाथ भंज ने श्रीश्री नारायण के समान उनकी चरण (सेवा) पूजा की।"]

उसी श्रीश्री रसिकमंगल ग्रन्थ में, परम वैष्णव, महाराजा श्री वैद्यनाथ भंज द्वारा की गयी स्तुति का इस प्रकार वर्णन है,

"अखिल ब्रह्माण्ड कर सृजन पालन।
तुमि विश्वरूप प्रभु देव नारायण।।

तोमार मायाते यातायात चराचर।
सवाकार आत्मा तुमि शरण पञ्जर।।
महाघोर कलियुगे जीवेरे देखिया।
उद्धारिते जन्म लैला सांगोपांग लइया।।"

-श्रीश्री रसिकमंगल (दक्षिण 12/68-70)

[अर्थात्–"तुम अखिल ब्रह्माण्ड का सृष्टि एवं पालन करते हो तथा तुम ही विश्वरूप हो एवं तुम ही नारायण हो। तुम्हारी माया से इस चराचर का गमनागमन होता है, तुम सभी के आत्मा तथा शरणागत-वत्सल हो। इस महाघोर कलियुग में जीवों की दुर्दशा को देखकर, उनका उद्धार करने के लिये, सपरिकर तुमने जन्म लिया है।"]

उसी श्रीश्री रसिकमंगल ग्रन्थ में पुनर्बार वर्णन है,

"रसिक महिमा सब अद्‌भुत कथन।
सबे बले रसिक द्वितीय नारायण।।"

-श्रीश्री रसिकमंगल-पश्चिम (३/६१)

[अर्थात्–"श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की महिमा की कथा अद्‌भुत है। सभी कहते हैं कि श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी द्वितीय श्रीश्री नारायण हैं।"]

उसी ग्रन्थ में, श्रीधाम पुरी के श्रीश्री जगन्नाथ रथयात्रा प्रसंग में यूं उल्लेख है,

"बहुरूपे विश्वास हईल गजपति।
नारायण स्वरूपे रसिके कैल स्तुति।।"

-श्रीश्री रसिक मंगल-उत्तर (१०/४७)

[अर्थात्–"श्रीधाम पुरी के महाराजा, गजपति (श्री लांगुला नृसिंह देव) का श्रीश्री रसिकानन्द प्रभुजी के प्रति बहुत विश्वास जाग्रत हो गया एवं वे श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की श्रीश्री नारायण स्वरूप में स्तुति करने लगे।"]

उसी ग्रन्थ में, बंगाल के नवाब, शाह सूजा (दिल्ली के मुगल सम्राट शाहजहां के पुत्र) प्रसंग में भी श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी को साक्षात् नारायण कहा गया है,

"ए सब लक्षण देखि यवनेर गण।
सेई हईते जानिल से साक्षात् नारायण।।"

श्रीश्री रसिकमंगल-उत्तर (११/४७)

[अर्थात्–"इतने सारे लक्षणों को देखकर (शाह सूजा सहित) यवनगण उसी समय से जान गये कि श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी साक्षात श्रीश्री नारायण हैं।"]

श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी स्वयं श्रीश्री कृष्ण भगवान भी हैं

उसी श्रीश्री रसिकमंगल ग्रन्थ में पुनः उल्लेखित है,

"युगे युगे जेन कृष्ण अवतीर्ण हैया।
साधुर स्थापना करे दुष्ट संहारिया।।
हेन रसिकेन्द्र चूड़ामणि महाशय।
सवारे करिल साधु पाप करि क्षय।।"

-श्रीश्री रसिकमंगल-उत्तर (१४/३७, ३८)

[अर्थात्–"जैसे प्रतियुग में, भगवान श्रीश्री कृष्ण दुष्टों का संहार करके साधुओं की रक्षा करते हैं उसी प्रकार श्रीश्री रसिकेन्द्र चूड़ामणि (श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी) ने सभी जीवों के पापों का क्षय करके सभी को साधू बना दिया।"]

श्रीश्री रसिकमंगल ग्रन्थ में बाणपुर के मुगल सूबेदार अहम्मदी वेग प्रसंग में उल्लेख है,

"शुनिया कहेन से बड़ बड़ लोक।
श्री रसिकमुरारी से कृष्णेर स्वरूप।।"

-श्रीश्री रसिक मंगल-पश्चिम (७/५६)

[अर्थात्–"सूबेदार का प्रश्न सुनकर, सभी विशिष्ट लोग कहने लगे कि श्रीश्री रसिकमुरारी जी भगवान श्रीश्रीकृष्ण के ही स्वरूप हैं।"]

उसी श्रीश्री रसिकमंगल ग्रन्थ में यह भी उल्लेख है,

"यत गुण धरे कृष्ण जगत जीवन।
रसिकेर अंगे रहे से सब लक्षण।।"

-श्रीश्री रसिकमंगल-दक्षिण (८/५)

[अर्थात्–"जगत के जीवन श्रीश्रीकृष्ण भगवान जितने सद्गुणों को धारण करते हैं वे सभी गुण श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के श्रीअंग में विद्यमान हैं।"]

श्रील नरहरि सरकार ठाकुर जी विरचित 'श्रीश्री भक्ति रत्नाकर' ग्रन्थ

में भी श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की महिमा का विशेष रूप से वर्णन किया गया है,

"श्री रसिकानन्द सदा मत्त संकीर्तने।
केवा ना विह्वल हय तार गुण गाने।।
जय जय रसिक सुरसिक मुरारी।
"करुणामय कलि कलुष विभंजन।
निरमल गुणगन जग मनोहारी।।"

-श्रीश्री भक्ति रत्नाकर (१५/८६-८७)

[अर्थात्–"श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी सर्वदा श्रीश्री हरिनाम संकीर्तन में मत्त रहते थे। उनके सद्गुणों का गान करके ऐसा कौन है जो प्रेम विह्वल नहीं हो जाता है? श्रीश्री रसिक जी, सुरसिक श्रीश्री मुरारी जी की जय-जयकार हो! वे करुणामय कलि कलुष भंजनकारी हैं जिनके निर्मल सद्गुणों ने जगत्वासियों के मन को हरण कर लिया है।"]

श्रील नित्यानन्द दास जी विरचित 'प्रेम विलास' ग्रन्थ में भी श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की महिमा का विशेष रूप से वर्णन है,

"रसिकानन्देर हय महिमा अपार।
तिंहो कैला बहु यवन दस्युर उद्धार।।"

-प्रेम विलास (१९)

[अर्थात्–"श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की अपार महिमा है, उन्होंने अनेक यवनों एवं दस्युओं का उद्धार किया।"]

श्रील नरहरि दास जी विरचित 'श्री नरोत्तम विलास' ग्रन्थ में भी श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की महिमा का वर्णन है,

"रसिकानन्देर चेष्टा देखि महाशय।
हइलेन हृष्ट जैछे कहिले ना हय।।"

-श्रीश्री नरोत्तम विलास (६)

[अर्थात्–"श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की दिव्य अलौकिक चेष्टा को देखकर श्रील नरोत्तम ठाकुर (महाशय) इतने सन्तुष्ट हुए कि उसे कहकर व्यक्त नहीं किया जा सकता है।"]

श्री नाभा दास जी कृत 'भक्तमाल' ग्रन्थ में, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी को विशेष रूप से साधु-सेवा के प्रचण्ड प्रवर्तक के रूप में उल्लिखित किया गया है,

"श्री रसिकमुरारी उदार अति, मत्त गजहिं उपदेश दियौ।
तन मन धन परिवार सहित, सेवत सन्तन कहं।।"

-श्रीश्री भक्तमाल (१३४)

[अर्थात्–"श्रीश्री रसिक मुरारी जी अतिशय उदार हुए। उन्होंने मतवाले हाथी को उपदेश देकर अपना शिष्य बना लिया और उदार तो ऐसे हुए कि परिवार सहित तन, मन, धन और जन से सन्तों की सेवा करते थे।"]

"श्रीश्री गोविन्द भाष्य" भाष्यकार, अचिन्त्य भेदाभेद तत्त्ववेत्ता, श्रील बलदेव विद्याभूषण प्रभुपाद ने भी उच्छसित होकर श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी का गुणानुवर्णन किया है।

उपरोक्त विभिन्न ग्रन्थों में, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की दिव्यातिदिव्य अलौकिक लीलाओं के विश्लेषण से तथा उनके तत्त्व का जो विश्लेषण किया गया है उससे यह स्वत: प्रमाणित है कि श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी ही नवरूप में श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी होकर आविर्भूत हुए थे। पहले, उन्होंने श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी के रूप में श्रीश्री शालग्राम जी को कच्चे चावल के भोग लगाने के अपराध में 'हरिहर' नामक जिस व्यक्ति को बाणपुर में सवंश हाथी योनि प्राप्त होने के लिये शाप दिया था, पुन: श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के रूप में आविर्भूत होकर उसी शापग्रस्त हरिहर (गज गोपाल दास) को शापमुक्त किया था। जैसे श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी के स्वरूप में उन्होंने श्रीश्रीकृष्ण प्रेम की बन्या से सभी को प्लावित कर दिया था ठीक वैसे ही श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के स्वरूप में उन्होंने स्थावर और अस्थावर सभी को श्रीश्रीकृष्ण प्रेम दान किया था। जिस लीला के अनुरूप, श्रीश्री कृष्णचैतन्य महाप्रभु जी पहले श्रीधाम पुरी में, 'श्रीश्री टोटा गोपीनाथ जी' के श्रीअंग में लीन हो गये थे ठीक उसी लीला के अनुरूप, श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के रूप में, 'रेमुणा' में 'श्रीश्री खीरचोरा गोपीनाथ जी' के श्रीअंग में सशरीर अन्तर्द्धान हो गये थे।

हे कलि-तापग्रस्त जीवों! अगर सुदुर्लभ श्रीश्रीकृष्ण प्रेम भक्ति को प्राप्त करके, 'नित्य श्री गोलोक वृन्दावन' में, श्रीश्री राधाश्यामसुन्दर जी के मधुरातिमधुर निकुञ्ज सेवा को प्राप्त करना चाहते हो तो भवार्णव के काण्डारी, श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभुजी का काय-मन-वाक्य से शरण ग्रहण करो।

श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्दाष्टकम्

जगन्नाथ शचीसुत श्रीगौरचन्द्रम्। पुनः भवे प्रकटित श्रीरसिकानन्दम्।।
नवीन नीरद घन श्यामल अंगम्। त्वं प्रणमामिच श्रीरसिकानन्दम्।।1।।

श्यामसुन्दर वैकुण्टेश्वर एकत्रीकृतम्। योगी ज्ञानी ध्यायं ब्रह्म परमात्माकम्।
अनिरुद्ध श्रीवास भवे पुनः प्रकटितम्। त्वं प्रणमामिच श्रीरसिकानन्दम्।।2।।

माता भवानी पिता अच्युत अवलम्वितम्। मल्लभूम देश रोहिणी नगर कुमारम्।।
कलिताप हत जीव उद्धार कारणम्। त्वं प्रणमामिच श्रीरसिकानन्दम्।।3।।

आजानुलम्बित भुज आयत नेत्रम्। सुउन्नत नासिका प्रशस्त वक्षम्।।
चांचर चिकुर केश बिम्बारुण अधरम्। त्वं प्रणमामिच श्रीरसिकानन्दम्।।4।।

कृष्णप्रिया श्यामानन्द श्रीचरण आश्रितम्। पापी-तापी सर्व जीव कृपया निस्तारम्।।
आहमदी वेग शाह सुजा उद्धारम्। त्वं प्रणमामिच श्रीरसिकानन्दम्।।5।।

गोपाल गुरु गजपति राजा आश्रितम्। इन्द्रदेव अग्निदेव आदेश पालितम्।
सुवर्णरेखा स्रोतस्विनी गति परिवर्तितम्। त्वं प्रणमामिच श्रीरसिकानन्दम्।।6।।

श्रीजगन्नाथ अपेक्षित अचलित रथम्। कुञ्जमठ लीलास्थली पुनः प्रकटितम्।।
कृपामय वटकृष्ण प्रेमया आकर्षितम्। त्वं प्रणमामिच श्रीरसिकानन्दम्।।7।।

गोपाल दास मत्त गज चरण आश्रितम्। सुकृति वैद्यनाथ राजा वैष्णव भावितम्।।
श्रीकर भीम दुष्ट पाप कर्म त्यजितम्। त्वं प्रणमामिच श्रीरसिकानन्दम्।।8।।

रसिकानन्द कुलज गोपाल गोविन्दात्मजम्।
वृन्दावन धाम स्थित श्यामसुन्दर सेवकम्।।
नवचैतन्य रसिकानन्द अष्टकं रचितम्।
गुरु वैष्णव कृपाभिलाषी कृष्ण गोपालानन्दम्।।
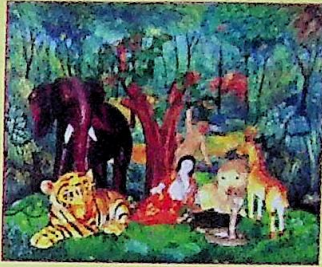
भगवान श्रीश्रीकृष्ण के विरह में अर्द्धमूर्च्छित
श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के
साथ श्रीश्रीकृष्ण नाम संकीर्तन करते हुए वन के पशुगण।
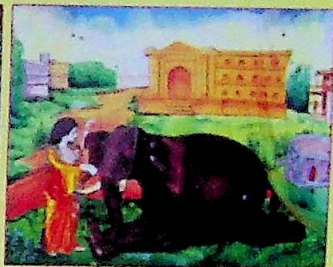
ई 1623 को उड़ीसा के बानपुर नगर में
विशाल जंगली मत्त हाथी को श्रीश्री हरिनाम दीक्षा
देते हुए श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी।

ई. 1637 में मुक्तापुर वासियों द्वारा श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी
का असम्मान करने के कारण क्रोधित
अग्नि देव गाँव के सभी घरों को जलाने लगे।

ई. 1638 में वन के दो विशाल व्याघ्र को
श्रीश्री हरिनाम दीक्षा देते हुए
श्रीश्री नवचैतन्य श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी।

शेखर भूमि के राजा की प्रार्थना से श्रीश्री नवचैतन्य
श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी ने देवराज इन्द्र को
आदेश देकर शेखर भूमि पर प्रबल वर्षा करायी।

श्रीपाट गोपीबल्लभपुर में
श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के द्वारा
प्रतिष्ठित श्रीश्री राधागोविन्द देव जी महाराज।
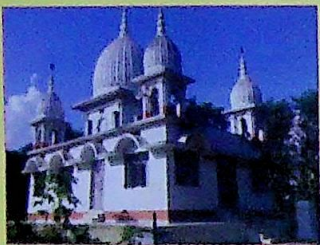
श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी का आविर्भाव स्थल। ई. 1590 में कार्तिक मास की शुक्ला प्रतिपदा को मल्लभूम की राजधानी रोहिणी नगर में श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी का आविर्भाव हुआ था।

उड़ीसा के बालेश्वर जिले के अन्तर्गत रेमुना में श्रीश्री खीरचोरा गोपीनाथ जी के मन्दिर परिसर में श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी का विश्राम गृह।

ई. 1637 में श्रीधाम पुरी के कुञ्जमठ में श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी के प्रेमाकर्षण से आगत श्रीश्री वटकृष्ण जी, बाद में जिनका नाम पड़ा श्रीश्री राधारसिकराय जी।

उड़ीसा के बालेश्वर जिले के अन्तर्गत रेमुना में श्रीश्री खीरचोरा गोपीनाथ जी का मन्दिर।

श्रीश्री रामचन्द्र जी एवं श्रीश्री सीताजी के हाथ से त्रेतायुग में निर्मित श्रीश्री खीरचोरा गोपीनाथ जी, जिनके श्रीअंग में ई. 1653 में फाल्गुन शुक्ला प्रतिपदा को श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी सशरीर अन्तर्धान हो गये।

उड़ीसा के बालेश्वर जिले के अन्तर्गत रेमुना में श्रीश्री खीरचोरा गोपीनाथ जी के श्रीमन्दिर के सामने श्रीश्री रसिकानन्द प्रभु जी की पुष्प समाधि।

Chaudhary Press-9837787802